

डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र 15, भाग्यशाली प्रदान

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल धर्म के दर्शन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 15 है, दिव्य प्रोविडेंस।

ठीक है, अगला मुद्दा जिसके बारे में हम यहाँ बात करेंगे वह है दिव्य प्रोविडेंस। प्रोविडेंस का सिद्धांत इस धारणा से संबंधित है कि ईश्वर दुनिया की देखभाल करता है या उसे नियंत्रित करता है।

यह दार्शनिक रूप से दिलचस्प है क्योंकि यह मानवीय स्वतंत्रता के साथ-साथ बुराई की समस्या से संबंधित कई सवाल उठाता है। हम जिन सवालों पर विचार करेंगे, या जिन्हें प्रोविडेंस के किसी विशेष सिद्धांत का उद्देश्य संबोधित करना है, वे हैं कि दुनिया पर ईश्वर का नियंत्रण कितना पूर्ण है? क्या ईश्वर मानवीय घटनाओं को पूर्वनिर्धारित करता है? और ईश्वरीय प्रोविडेंस मानवीय स्वतंत्रता और दुनिया में बुराई की उपस्थिति के साथ कैसे मेल खाता है? तो मैं प्रोविडेंस के प्रत्येक प्रमुख दृष्टिकोण को संक्षेप में समझाते हुए शुरू करूँगा, ऑगस्टीनियन कैल्विनिस्ट दृष्टिकोण से शुरू करते हुए कि ईश्वर सभी चीजों को निर्धारित करता है जो घटित होती हैं। तो, इस दृष्टिकोण में, मानव जीवन सहित दुनिया पर ईश्वर का नियंत्रण पूरी तरह से पूर्ण है।

जैसा कि कभी-कभी कहा जाता है, ईश्वरीय कृपा बहुत ही सूक्ष्म होती है, जो ब्रह्मांड के सभी विवरणों को नियंत्रित करती है, जिसमें मानव प्राणी भी शामिल हैं। सरल दिव्य पूर्वज्ञान वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार ईश्वर केवल उन सभी चीजों को पहले से जानता है जो घटित होंगी। वह उन्हें पूर्वनिर्धारित नहीं करता है।

इसलिए जो लोग सरल दिव्य पूर्वज्ञान का बचाव करते हैं, वे मानव स्वतंत्रता की एक निश्चित अवधारणा की रक्षा के लिए ऐसा करते हैं, जैसा कि हम देखेंगे। मानव स्वतंत्रता पर अलग-अलग विचार हैं जो इनमें से प्रत्येक दृष्टिकोण में शामिल हैं। दिव्य मध्य ज्ञान, जिसे मोलिनिज़्म के रूप में भी जाना जाता है, वह दृष्टिकोण है कि ईश्वर उन सभी चीजों को जानता है जो स्वतंत्र प्राणी करेंगे, और वह उसी के अनुसार निर्णय लेता है।

मैं इसे और साथ ही इन अन्य विचारों को भी विस्तार से समझाऊँगा। और फिर, अंत में, खुला ईश्वरवाद है, जो हाल ही में प्रचलित एक कम रूढ़िवादी दृष्टिकोण है, जिसके अनुसार ईश्वर भविष्य को पूरी तरह से नहीं जानता है, और उसे आश्चर्य भी हो सकता है कि कुछ चीजें घटित हुई हैं। और ईश्वर मानवता को बनाने में जोखिम उठाता है, यह नहीं जानता कि कई घटनाओं और मानवीय विकल्पों का परिणाम क्या होगा।

तो ये चार मानक दृष्टिकोण हैं। अब, मैंने उल्लेख किया है कि इनमें से प्रत्येक दृष्टिकोण स्वतंत्रता पर एक विशेष दृष्टिकोण मानता है। तो, आइए मानव स्वतंत्रता के तीन प्रमुख विचारों को स्पष्ट

करें, हार्ड डिटरमिनिज्म से शुरू करें, जो एक ऐसा दृष्टिकोण है जो सार्वभौमिक कारणता की पुष्टि करता है और मानव स्वतंत्रता को नकारता है।

हार्ड डिटरमिनिस्ट का कहना है कि दुनिया में हर प्रभाव और हर घटना का एक पर्याप्त कारण होता है, और इसमें वह इंसान भी शामिल है जो चुनाव करता है; हार्ड डिटरमिनिस्ट के अनुसार, इंसान द्वारा किया गया हर चुनाव, पूर्व कारणों से निर्धारित होता है। भले ही उसे इस बात का अहसास न हो, लेकिन इंसान द्वारा किए गए हर चुनाव के लिए हमेशा कोई न कोई पर्याप्त कारण होता है। और इसी वजह से, हार्ड डिटरमिनिस्ट का कहना है कि इंसान को स्वतंत्र नहीं होना चाहिए।

हम स्वतंत्र नहीं हैं, और हमारे पास नैतिक जिम्मेदारी नहीं है। लिबर्टेरियन, एक अर्थ में, विपरीत दृष्टिकोण रखता है। लिबर्टेरियन मानव स्वतंत्रता की पुष्टि करता है, लेकिन ऐसा करने के लिए सार्वभौमिक कारण को नकारता है, यह कहते हुए कि मानव इच्छा इस कारण निर्धारण के नियम का अपवाद है।

और फिर, जैसा कि नाम से ही पता चलता है, कम्पैटिबिलिस्ट दृष्टिकोण यह मानता है कि मानवीय स्वतंत्रता और सार्वभौमिक कारण तार्किक रूप से संगत हैं। सभी मानवीय विकल्पों का कारण होना चाहिए। वे इस बिंदु पर हार्ड डिटरमिनिस्ट से सहमत हैं।

लेकिन फिर भी, जब तक हमारे विकल्पों के कारण हमारे भीतर हैं, तब तक मनुष्य महत्वपूर्ण स्वतंत्रता का आनंद लेता है। मैं जो चुनाव करता हूँ वह मेरी तात्कालिक मनोवैज्ञानिक स्थिति, मेरी इच्छाओं और मेरे उद्देश्यों का परिणाम है। जब तक मुझे बाहर से मजबूर नहीं किया जा रहा है, मेरे हाथ बंधे नहीं हैं, मुझे एक कमरे में बंद नहीं किया जा रहा है, मैं अपनी पसंद के अनुसार कार्य करने में सक्षम हूँ, और यह मेरी स्वतंत्रता को सुरक्षित करता है, कम्पैटिबिलिस्ट के अनुसार।

कभी-कभी, इस दृष्टिकोण को नरम नियतिवाद के रूप में जाना जाता है। जब स्वतंत्रता पर विचारों के इस मुद्दे पर ईसाई अभिविन्यास की बात आती है, तो मुझे लगता है कि यह कहना सुरक्षित है कि इन तीन विचारों में से एक जिससे ईसाई को दूर रहना चाहिए वह है कठोर नियतिवाद, और ऐसा इसलिए है क्योंकि शास्त्र में यह स्पष्ट है कि मनुष्य नैतिक रूप से जिम्मेदार हैं, इसलिए इसके लिए स्वतंत्रता की कुछ महत्वपूर्ण भावना होनी चाहिए, और यह कठोर नियतिवाद का खंडन करेगा। इसलिए, ईसाई के लिए, हमारे विकल्प किसी प्रकार के स्वतंत्रतावाद, किसी प्रकार के संगतिवाद तक सीमित हैं।

इन दो दृष्टिकोणों में से एक, जैसा कि हम प्रोविडेंस के इन अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखेंगे, यह है कि उनमें से अधिकांश स्वतंत्रतावादी विश्वास पर आधारित हैं, जो मानव स्वतंत्रता के लिए स्वतंत्रतावादी दृष्टिकोण को चुनते हैं। उनमें से एक है कम्पैटिबिलिस्ट, जो ऑगस्टिनियन कैल्विनिस्ट दृष्टिकोण है। जब मानव स्वतंत्रता की बात आती है तो कैल्विनिस्ट कम्पैटिबिलिस्ट होते हैं।

तो, आइए ईश्वरीय प्रावधान पर इन विचारों में से प्रत्येक के बारे में थोड़ी बात करें और इन विचारों को थोड़ा सा समझें, ओपन थियोइज़्म से शुरू करें, एक ऐसा दृष्टिकोण जिसे फ्री विल थियोइज़्म के रूप में भी जाना जाता है। डेविड बैसिंगर, क्लार्क पिनाक, जॉन सैंडर्स और विलियम हास्कर जैसे लोगों ने इसका बचाव किया है। ये पाँच लेखकों में से चार थे जिन्होंने 90 के दशक के मध्य से लेकर मध्य तक द ओपननेस ऑफ़ गॉड नामक एक पुस्तक लिखी थी, और इसने वास्तव में इस पर विद्वानों की चर्चा में बहुत रुचि पैदा की।

इसे ईश्वरीय प्रावधान का एक नया दृष्टिकोण माना जाता था, जो वास्तव में नया नहीं था। 20वीं सदी के आरंभ में मुक्ति धर्मशास्त्र, नारीवादी धर्मशास्त्र और प्रक्रिया धर्मशास्त्र में इसके संस्करण थे। लेकिन खुला ईश्वरवाद अद्वितीय था, कम से कम इस हद तक कि इस दृष्टिकोण के समर्थक पवित्रशास्त्र के पूर्ण अधिकार में विश्वास करने वाले थे, और यहां तक कि यह भी मानते थे कि पवित्रशास्त्र अचूक है।

इसलिए, कई मामलों में वे पवित्रशास्त्र के बारे में उच्च दृष्टिकोण रखते हैं। तो सवाल यह है कि क्या यह वास्तव में पवित्रशास्त्र के दृष्टिकोण से मेल खा सकता है? खैर, यह दृष्टिकोण क्या है? जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, खुले ईश्वरवादियों का मानना है कि ईश्वर वास्तव में सृष्टि में जोखिम उठाता है। वे इस बात से इनकार करते हैं कि ईश्वर के पास संपूर्ण पूर्वज्ञान है।

वह भविष्य के बारे में सब कुछ नहीं जानता। वे कहेंगे कि भविष्य को एक पूर्ण प्राणी, यानी ईश्वर भी नहीं जान सकता। वे इस विचार का प्रस्ताव करते हैं कि ईश्वर के पास संपूर्ण दिव्य पूर्वज्ञान नहीं है क्योंकि वे मानव स्वतंत्रता के एक उदारवादी दृष्टिकोण की रक्षा और संरक्षण के बारे में चिंतित हैं और बुराई की समस्या से निपटने में मदद करते हैं और इस दुनिया में अत्यधिक बुरे दुख की वास्तविकता को ईश्वर की वास्तविकता के साथ जोड़ने का प्रयास करते हैं।

इसलिए, ओपन थिसिस्ट इन समस्याओं से निपटने के लिए स्वतंत्रतावादी मानव स्वतंत्रता की अपील करते हैं। वे कहते हैं कि अगर मनुष्य वास्तव में इस अर्थ में स्वतंत्र हैं, स्वतंत्रतावादी स्वतंत्र इच्छा, तो भगवान भी पहले से नहीं जान सकते कि हम क्या चुनेंगे। यह ऐसी चीज़ है जिस तक एक सर्वज्ञ भगवान की भी पहुँच नहीं हो सकती, यानी, यह ज्ञान कि एक स्वतंत्रतावादी स्वतंत्र प्राणी भविष्य में क्या चुनेगा।

और बुराई हमारी स्वतंत्रतावादी स्वतंत्र इच्छा के दुरुपयोग का परिणाम है। तो यह सब हम पर है। मनुष्य द्वारा किए गए किसी भी बुरे काम के लिए भगवान जिम्मेदार नहीं है।

तो इस तरह से ओपन थियोस्ट बुराई की समस्या से निपटता है। यह बहुत सीधा है। विलियम हास्कर और डेविड बासिंगर जैसे ओपन थियोस्ट ने कुछ गहन तर्क दिए हैं जिनका उद्देश्य यह दिखाना है कि स्वतंत्रतावादी स्वतंत्रता संपूर्ण ईश्वरीय पूर्वज्ञान के साथ असंगत है।

तो, इस दावे का मूल तर्क यह है: मानवीय स्वतंत्रता में विपरीत विकल्प चुनने की शक्ति शामिल है। जब चुनाव के क्षण की बात आती है, अगर मैं ब्रेड पुडिंग के बजाय चॉकलेट केक चुनता हूँ, और मैंने ऐसा स्वतंत्र रूप से किया, तो इसका मतलब है कि अगर आप इसे वापस घुमाते हैं और मुझे उसी परिस्थिति में रखते हैं, तो मेरे पास वास्तव में विपरीत विकल्प चुनने और ब्रेड पुडिंग के

साथ जाने की शक्ति थी। चुनाव के उस क्षण में सभी समान कारणात्मक स्थितियां प्राप्त की जा सकती थीं, और मेरे पास अभी भी एक या दूसरे तरीके से जाने की शक्ति थी।

मैं कई तरह के विकल्पों में से कोई भी चुन सकता था। यही विपरीत विकल्प की शक्ति है। खैर, चुने गए कार्य के बारे में संपूर्ण दिव्य पूर्वज्ञान यह दर्शाता है कि वह कार्य अन्यथा नहीं हो सकता।

अगर भगवान को पता है कि मैं चॉकलेट केक चुनने जा रहा हूँ, तो जब चुनाव का क्षण आएगा, तो मैं वास्तव में ब्रेड पुडिंग नहीं चुन सकता, है न? क्योंकि मैं भगवान के स्पष्ट ज्ञान को गलत नहीं बना सकता। अगर भगवान को वास्तव में पता है कि यह होने जा रहा है, तो यह अन्यथा नहीं हो सकता। इसलिए, संपूर्ण दिव्य पूर्वज्ञान का तात्पर्य है कि विपरीत विकल्प की कोई शक्ति नहीं है।

मैं वास्तव में चॉकलेट केक चुनने जा रहा हूँ। मैं वास्तव में ब्रेड पुडिंग नहीं चुन सकता अगर भगवान को पहले से पता हो कि मैं केक चुनने जा रहा हूँ। संपूर्ण दिव्य पूर्वज्ञान का तात्पर्य है कि किसी निश्चित चीज़ को चुनने की कोई वास्तविक स्वतंत्रता नहीं है, और यह सभी मानवीय कार्यों पर लागू होता है।

इसलिए, संपूर्ण दिव्य पूर्वज्ञान के कारण मनुष्य के पास कोई स्वतंत्रता नहीं है। अब, यह सारा नोटिस मानव स्वतंत्रता के एक स्वतंत्रतावादी दृष्टिकोण पर आधारित है, जो कि, आप जानते हैं, हमारे पास जो दृष्टिकोण है वह विपरीत विकल्प की एक तरह की शक्ति है, और इच्छा पूरी तरह से निर्धारित नहीं है। लेकिन स्वतंत्रतावादी स्वतंत्रता की धारणा को देखते हुए, खुले ईश्वरवादी संपूर्ण दिव्य पूर्वज्ञान के खिलाफ यह तर्क दे सकते हैं।

वे संपूर्ण ईश्वरीय पूर्वज्ञान के इस सिद्धांत के बारे में कुछ और बातें कहते हैं। यदि ईश्वर को पहले से पता था कि एक्स घटित होगा, तो एक्स के सच होने की पहले से ही गारंटी है। तो, यदि ईश्वर को पहले से पता है कि क्या होने वाला है, तो उसके पास किस तरह का दैवीय कार्य करने के लिए बचा है? वास्तव में, ऐसा लगता है कि यह ईश्वर को उसके भविष्य के कार्यों के संदर्भ में बांधता है।

कि भविष्य में उसे कुछ करना है, तो उसे वह करना ही होगा, और वह इसके अलावा कुछ नहीं कर सकता। ऐसा लगता है कि यह ईश्वरीय स्वतंत्रता को भी खत्म कर देता है। इसके अलावा, संपूर्ण ईश्वरीय पूर्वज्ञान, खुले ईश्वरवादी कभी-कभी ध्यान देंगे कि यह ईश्वरीय भावना को खत्म कर देता है।

सच्ची दिव्य भावना तभी संभव है जब ईश्वर को सभी परिणाम पहले से पता न हों। वे कहेंगे कि ईश्वर को सभी परिणाम पहले से पता नहीं होते। उसे सभी परिणाम नहीं पता होने चाहिए क्योंकि मनुष्य के पास स्वतंत्र इच्छाशक्ति है, और इसीलिए वह वास्तव में आश्चर्यचकित, निराश या क्रोधित हो सकता है।

मानवीय क्रियाकलापों के प्रति उसकी कोई भी भावना या भावनात्मक प्रतिक्रिया इस तथ्य का संकेत है कि उसे वास्तव में नहीं पता था कि क्या होने वाला है या कोई व्यक्ति क्या करने जा रहा है। विलियम हास्कर ने ईश्वरीय सर्वज्ञता के इस सिद्धांत को एक खुले ईश्वरवादी दृष्टिकोण से

विकसित किया। वह ईश्वरीय सर्वज्ञता और ईश्वरीय सर्वशक्तिमानता के बीच एक समानता स्थापित करता है, जैसा कि इसे आमतौर पर परिभाषित किया जाता है।

तो, सर्वशक्तिमानता सर्वशक्तिमानता की एक मानक परिभाषा है, जो कम से कम थॉमस एक्विनास तक जाती है, कि ईश्वर कुछ भी कर सकता है जो तार्किक रूप से संभव है और पूर्णता के अनुरूप है। हास्कर कहते हैं, सर्वज्ञता को इस तरह से परिभाषित किया जा सकता है कि यह इसके समानांतर है, कि ईश्वर वह सब कुछ जानता है जिसे जाना जा सकता है, लेकिन जैसा कि वे कहते हैं, ईश्वर के लिए उन प्राणियों के कार्यों का पूर्वज्ञान होना तार्किक रूप से असंभव है जो वास्तव में स्वतंत्र हैं। इसलिए, तार्किक दृष्टिकोण से, ईश्वर वह सब कुछ नहीं जान सकता जो आप कल करने जा रहे हैं क्योंकि किसी भी प्राणी के लिए यह जानना तार्किक रूप से असंभव है क्योंकि हमारे पास स्वतंत्र इच्छा है।

यह हास्कर का दृष्टिकोण है, और यह खुले ईश्वरवादियों का एक समूह के रूप में बहुत अच्छा प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए, चूंकि ईश्वर के पास संपूर्ण पूर्वज्ञान नहीं है, इसलिए खुले ईश्वरवादियों का मानना है कि ईश्वर मनुष्यों को बनाने में वास्तविक जोखिम उठाता है। उसे पहले से पता नहीं था कि चीजें कैसे होंगी।

वह निश्चित रूप से नहीं जानता था कि मनुष्य पाप में गिर जाएगा, और वह पहले से नहीं जानता था कि कोई भी मनुष्य विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा उद्धार के अपने प्रस्ताव पर कैसे प्रतिक्रिया देगा। और यह कि ईश्वर भविष्य के बारे में अपने विश्वासों, आशाओं और अपेक्षाओं में आश्चर्यचकित, निराश, यहाँ तक कि गलत भी हो सकता है। और यह स्पष्ट रूप से विवादास्पद है, एक बार जब आप ईश्वर द्वारा गलतियाँ करने के बारे में बात करना शुरू करते हैं, तो आप कुछ निषिद्ध क्षेत्र, कुछ गंभीर धार्मिक समस्याओं में कदम रख रहे हैं।

लेकिन खुले ईश्वरवादी, कम से कम ज्यादातर मामलों में, इस दृढ़ विश्वास में दृढ़ रहते हैं। विलियम हास्कर के पास भविष्यसूचक भविष्यवाणी के लिए एक तीन-स्तरीय दृष्टिकोण है जो मुझे लगता है कि काफी अभिनव है। यह एक ऐसा सवाल है जो खुले ईश्वरवाद और इस विचार के बारे में सोचते समय स्वाभाविक रूप से उठता है कि ईश्वर भविष्य के बारे में गलत हो सकता है और भविष्य को नहीं जानता है; यह उससे छिपा हुआ है, और आप जानते हैं, कुछ ऐसी चीजें हैं जो वह स्वतंत्रतावादी स्वतंत्र इच्छा के कारण नहीं जान सकता है।

फिर ऐसा कैसे है कि वह सैकड़ों, यहाँ तक कि हजारों साल पहले की भविष्यवाणियाँ कर सकता है जो पूरी तरह से सटीक साबित होती हैं? इसलिए, हास्कर का कहना है कि हमें इसे विभिन्न प्रकार की भविष्यवाणियों में विभाजित करने की आवश्यकता है। वे कहते हैं कि सशर्त भविष्यवाणियाँ होती हैं, जो मनुष्यों की कार्रवाई पर निर्भर होती हैं। यदि आप एक्स करते हैं, तो मैं वाई करूँगा। तो, सशर्त भविष्यवाणियाँ हैं।

मौजूदा रुझानों और प्रवृत्तियों के आधार पर भविष्यवाणियाँ की जाती हैं। इसलिए वह उसके आधार पर भविष्यवाणियाँ कर सकता है। और फिर ऐसी घोषणाएँ भी होती हैं कि परमेश्वर स्वयं क्या करने का इरादा रखता है।

वह गारंटी दे सकता है कि वे चीजें घटित होंगी। इसलिए, यह एक विशेष भविष्यवाणी पर निर्भर करता है। अगर हमें यह वास्तव में असंभव या आश्चर्यजनक लगता है कि उसने भविष्यवाणी की, जैसे कि, मसीहा एक निश्चित समय और स्थान पर पैदा होगा, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने सुनिश्चित किया था कि ऐसा होगा।

उन्होंने ऐसा नहीं किया, यह उन चीजों में से एक है जिसे उन्होंने अपने आप चलने नहीं दिया। उन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए हस्तक्षेप किया कि ऐसा हो। मैं हस्कर द्वारा की गई भविष्यवाणियों के इस तीन-स्तरीय वर्गीकरण के बारे में यही कहना चाहूँगा। मुझे लगता है कि पहली और तीसरी श्रेणियाँ समझ में आती हैं, निश्चित रूप से जब वह सशर्त भविष्यवाणियों और भगवान क्या करने का इरादा रखते हैं, इसकी घोषणाओं के बारे में बात कर रहे हैं।

हमें इसे स्वीकार करना होगा। मुझे लगता है कि यह दूसरी श्रेणी है जो समस्याग्रस्त है। यदि मनुष्य के पास स्वतंत्रतावादी स्वतंत्रता है, तो मौजूदा रुझान और प्रवृत्तियाँ एक सर्वज्ञ प्राणी के लिए भी अपर्याप्त होंगी, कम से कम खुले ईश्वरवादी दृष्टिकोण पर, भविष्य की विश्वसनीय भविष्यवाणी करने के लिए, विशेष रूप से सैकड़ों वर्षों के भविष्य के लिए।

यह काम नहीं करेगा। और इनमें से बहुत से मामलों में, आप जानते हैं, वे सशर्त भविष्यवाणियाँ नहीं हैं। इसलिए, यदि दूसरी श्रेणी काम नहीं करेगी और वे सशर्त भविष्यवाणियाँ नहीं हैं, तो वे सभी ऐसे मामले होंगे जो परमेश्वर स्वयं करना चाहता है।

लेकिन अब आपको मानवीय स्वतंत्रता और स्वतंत्रतावादी स्वतंत्र इच्छा में इतना अधिक दैवीय हस्तक्षेप मिल गया है कि ऐसा लगता है कि यह खुले ईश्वरवादियों की इच्छा को नुकसान पहुंचा रहा है, जो कि मानवीय स्वतंत्रतावादी स्वतंत्रता को संरक्षित करना है। आपके पास एक ऐसा ईश्वर है जो इतना दखल देने वाला है, यह सुनिश्चित करता है कि चीजें ठीक से काम करें। इन सभी भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिए, मानवीय स्वतंत्रता में बहुत अधिक हस्तक्षेप है।

इसलिए, मुझे लगता है, पहली नज़र में, यह विश्लेषण सम्मोहक लग सकता है, लेकिन यह उदारवादी स्वतंत्रता के लिए खुले ईश्वरवादी प्रतिबद्धता को देखते हुए काफी समस्याग्रस्त साबित होता है। एक और समस्या: ईश्वर कैसे गारंटी दे सकता है कि इतिहास के लिए उसकी योजनाएँ पूरी होंगी, फिर से, उदारवादी स्वतंत्रता को देखते हुए? हास्कर कहते हैं कि ईश्वर बहुत संसाधन संपन्न है और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सभी मानवीय प्रतिक्रियाओं के लिए अपनी योजना को अनुकूलित कर सकता है। तो, यह खुला ईश्वरवाद है और कुछ ऐसे विचार और अवधारणाएँ हैं जो कुछ प्रमुख खुले ईश्वरवादियों द्वारा विकसित की गई हैं, साथ ही इस दृष्टिकोण के साथ कुछ समस्याएँ भी हैं।

इनमें से सबसे महत्वपूर्ण, फिर से, यह सुझाव है कि भगवान कभी-कभी अपने विचारों में गलत होते हैं, बस यह विचार कि भगवान भविष्य को पूरी तरह से नहीं जानते हैं। यह ईश्वर के बाइबिल चित्रण के लिए विदेशी लगता है, कम से कम मेरे शास्त्र के पढ़ने में। हालाँकि, प्रोविडेंस पर तीनों विचारों के समर्थक खुले ईश्वरवाद के कड़े आलोचक होंगे।

तो, आइए प्रोविडेंस पर अन्य विचारों के बारे में बात करें, जिनमें से सभी को मैं पवित्रशास्त्र के उच्च दृष्टिकोण वाले ईसाई के लिए रूढ़िवादी विकल्प कहूंगा। इनमें से एक सरल दिव्य पूर्वज्ञान है, और इस दृष्टिकोण के एक प्रमुख समर्थक डेविड हंट हैं। हंट खुले ईश्वरवादियों द्वारा की गई आलोचनाओं के खिलाफ सरल दिव्य पूर्वज्ञान का बचाव करते हैं कि संपूर्ण दिव्य पूर्वज्ञान का सिद्धांत कोई प्रोविडेंसियल लाभ प्रदान नहीं करता है।

क्या संपूर्ण दिव्य पूर्वज्ञान वाला ईश्वर इसके बिना ईश्वर से बड़ा होगा? हंट हाँ कहते हैं, और वे एक तरह का विचार प्रयोग बनाते हैं जहाँ मान लेते हैं कि E एक घटना का प्रतिनिधित्व करता है, E के बारे में ईश्वर का ज्ञान, और फिर ईश्वर की क्रिया और ईश्वर का उद्देश्य इस विचार प्रयोग में शामिल सभी तत्व हैं। हंट सरल दिव्य पूर्वज्ञान को इस अर्थ में समझते हैं कि ईश्वर, जैसा कि यह था, देख सकता है कि समय के हिसाब से क्या दूर है, ठीक उसी तरह जैसे हम स्थानिक रूप से दूर की चीज़ों को देख सकते हैं। इसलिए, हंट के अनुसार, E का K, या E के बारे में ईश्वर का ज्ञान, व्याख्यात्मक रूप से E पर निर्भर है। वे इस दृष्टिकोण को पूर्ण, सरल पूर्वज्ञान कहते हैं क्योंकि ईश्वर एक ही बार में संपूर्ण भविष्य को ग्रहण कर लेता है।

यह उससे अलग है जिसे वह वृद्धिशील सरल पूर्वज्ञान कहते हैं, जहाँ, आप जानते हैं, भगवान भविष्य के बारे में ज्ञान प्राप्त कर रहे होंगे, या भविष्य के बारे में उनका ज्ञान धीरे-धीरे बढ़ेगा। पूर्ण सरल पूर्वज्ञान के साथ, भगवान एक ही बार में सब कुछ जान लेते हैं। हंट का दृष्टिकोण यही है।

इसलिए, हंट भगवान और शैतान के बीच पत्थर-कागज़-कैंची के खेल की कल्पना करता है, ताकि यह दर्शाया जा सके कि भगवान एक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पूर्ण सरल पूर्वज्ञान का उपयोग करते हैं, इस मामले में, खेल जीतना। उम्मीद है, यह बहुत मूर्खतापूर्ण विचार नहीं है, लेकिन यह दर्शाता है कि वह क्या कहना चाह रहा है। भगवान पहले से जानता है कि शैतान क्या चुनेगा, और भगवान इसका उपयोग अपने स्वयं के विजयी निर्णय लेने के लिए करता है।

तो, इस तरह से भगवान का सरल पूर्वज्ञान किसी विशेष परिस्थिति में उपयोगी होता है। शैतान के साथ पत्थर-कैंची-कागज़ का खेल किसी भी मानवीय परिस्थिति का प्रतिनिधित्व कर सकता है। जॉन सैंडर्स का तर्क है कि हंट का दृष्टिकोण समस्याग्रस्त है क्योंकि इसका तात्पर्य है कि भगवान वास्तव में किसी ऐसी चीज़ को होने से नहीं रोक सकते हैं, जिसके बारे में उन्हें पता है कि वह होने वाली है।

अगर भगवान को पहले से पता है कि कल मेरी कार दुर्घटना होने वाली है, तो चूँकि वह इसे जानता है, इसलिए वह इसे रोक नहीं सकता। और निश्चित रूप से, उस संबंध में मेरी सुरक्षा के लिए की गई कोई भी प्रार्थना बेकार होगी क्योंकि भगवान घटना के बारे में अपने स्वयं के उन्नत ज्ञान से बंधे हैं। हंट ने जवाब देते हुए कहा कि रोकथाम ही एकमात्र प्रकार की दैवीय गतिविधि नहीं है।

ऐसी रोकथाम है जिसके लिए परमेश्वर अपने पूर्ण, सरल पूर्वज्ञान का उपयोग कर सकता है, अर्थात् शैतान को पत्थर-कागज़-कैंची के खेल में जीतने से रोकना। हालाँकि, हंट सैंडर्स की आलोचना के मुद्दे को समझने में विफल लगता है, कम से कम, क्योंकि पूर्ण सरल पूर्वज्ञान

विपरीत विकल्प की शक्ति को खारिज नहीं करता है। मुझे खेद है। यह भविष्य में परमेश्वर के कार्यों के मामले में विपरीत विकल्प की शक्ति को खारिज करता है।

यही वह बिंदु था जिसे मैं पहले भी उठा रहा था। यही कारण है कि सैंडर्स कहते हैं कि हंट के विचार में, भगवान को तब पता चल जाएगा कि वह क्या करने जा रहा है, इससे पहले कि वह अपना मन बना ले, और भगवान किसी दिए गए मामले में अपने कार्यों के बारे में योजना बनाने, पूर्वानुमान लगाने या निर्णय लेने में असमर्थ होंगे। यदि वह पहले से जानता है कि वह क्या करने जा रहा है, तो उसके पास विचार-विमर्श या योजना बनाने का कोई आधार नहीं है।

वह बस वही करता है, जब वह क्षण आता है, जो वह पहले से जानता था कि वह करने जा रहा है। और ऐसा लगता है कि यह एक निश्चित दिव्य तर्कसंगतता या विचार-विमर्श को दूर कर देता है, जो कि विरोधाभासी लगता है। इसलिए, इस दृष्टिकोण के साथ भी समस्याएं हैं, सरल दिव्य पूर्वज्ञान दृष्टिकोण।

विडंबना यह है कि जिस तरह से यह ईश्वरीय स्वतंत्रता को बाधित करता है, भले ही यह मानवीय स्वतंत्रता की रक्षा करता प्रतीत होता है, यह ईश्वर को हथकड़ी लगाता है। तीसरा दृष्टिकोण, ईश्वरीय मध्य ज्ञान, जिसे मोलिनिज़्म के रूप में भी जाना जाता है, 16वीं शताब्दी में जेसुइट पादरी, जेसुइट धर्मशास्त्री लुइस डी मोलिना द्वारा तैयार किया गया था। इसीलिए इसे मोलिनिज़्म कहा जाता है।

क्रेग इस मुद्दे पर अपनी चर्चा कई मामलों में एबेनेज़र स्कूज द्वारा ए क्रिसमस कैरोल में उनसे मिलने आने वाली आत्माओं में से एक से पूछे गए सवाल पर विचार करके शुरू करते हैं। मुझे लगता है कि यह क्रिसमस के भविष्य का भूत है। और स्कूज जानना चाहता है, आप जानते हैं, क्या ये घटनाएँ घटित होंगी या घटित हो सकती हैं? हो सकता है या हो सकता है के उस विचार से निकटता से संबंधित यह विचार है कि कुछ निश्चित परिस्थितियों को प्राप्त करने पर क्या होगा।

यहीं पर मोलिना तथाकथित मध्य ज्ञान के विचार पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो कि ईश्वर का ज्ञान है कि क्या होगा। यह केवल यह नहीं है कि क्या होगा, यह केवल यह नहीं है कि क्या हो सकता है या क्या हो सकता है, बल्कि यह है कि कुछ शर्तों के तहत क्या होगा। ये प्रतितथ्यात्मक शर्तें हैं जो कि क्या हो सकता है और क्या होगा के बीच स्थित हैं।

विलियम लेन क्रेग जैसे लोगों के अनुसार, वे ईश्वर की पहेलियों को सुलझाने की कुंजी प्रदान करते हैं। यहाँ कुछ काउंटरफैक्टुअल कंडीशनल्स के उदाहरण दिए गए हैं। अगर मैं अमीर होता, तो मैं एक मर्सिडीज बेंज खरीदता।

यह सच नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि शायद यह विलियम लेन क्रेग के बारे में सच है। यह मेरे बारे में सच नहीं है। अगर गोल्डवाटर राष्ट्रपति होते, तो अमेरिका वियतनाम युद्ध जीत जाता। यह तथ्यहीन है।

अगर आप उससे बाहर जाने के लिए कहेंगे, तो वह हाँ कहेगी। ये सब तथ्य-विरोधी शर्तें हैं। पूर्ववृत्त सत्य नहीं हैं।

मैं अमीर नहीं हूँ, गोल्डवाटर कभी राष्ट्रपति नहीं रहे, और इस मामले में, उस व्यक्ति ने उस लड़की को बाहर जाने के लिए नहीं कहा है। लेकिन अगर वे चीजें हुई थीं, अगर वे हुई, तो विचार यह है कि ये अन्य चीजें भी होंगी। यह एक तरह की प्रतितथ्यात्मक सशर्तता है, और ऐसी चीजों का ज्ञान एक तरह का मध्य ज्ञान होगा।

इसका संबंध ईश्वर के रचनात्मक आदेशों के तार्किक क्रम से है। इसलिए, मोलिना ने कहा कि ईश्वर के पास दो तरह के ज्ञान हैं: प्राकृतिक ज्ञान और मुक्त ज्ञान। प्राकृतिक ज्ञान ईश्वर का सभी आवश्यक सत्यों का ज्ञान है, जिसमें वे सभी संभावित दुनियाएँ शामिल हैं जिन्हें वह बना सकता है।

उसके पास वह ज्ञान है, और उसके पास स्वतंत्र ज्ञान है, और वह वास्तविक दुनिया के बारे में सभी आकस्मिक सत्यों का ज्ञान है, जिसमें भूत, वर्तमान और भविष्य शामिल हैं। उसके पास उस तरह का ज्ञान है, लेकिन उसके पास कुछ ऐसा भी है जो इन दोनों के बीच में आता है। मोलिना का सुझाव है कि ईश्वर का प्राकृतिक ज्ञान उसके किसी भी आदेश से पहले है, और उसका स्वतंत्र ज्ञान उसके आदेशों से उत्पन्न होता है।

उसके पास ईश्वरीय आदेशों से पहले का ज्ञान है और फिर ईश्वर के आदेशों के परिणामस्वरूप जो ज्ञान है। प्रतितथ्यात्मक सत्यों के बारे में उसका ज्ञान इन दो चीजों के बीच में है। यह उसके स्वाभाविक ज्ञान और उसके स्वतंत्र ज्ञान के बीच में है, और इसीलिए इसे मध्य ज्ञान कहा जाता है।

यह परमेश्वर का ज्ञान है कि स्वतंत्र प्राणी विभिन्न परिस्थितियों में क्या करेंगे। इसलिए, पतरस द्वारा मसीह को अस्वीकार करने के संबंध में, परमेश्वर जानता था कि इस प्रलोभन का सामना करने पर पतरस क्या करेगा, और परमेश्वर ने उस दुनिया को निर्धारित किया जिसमें पतरस को इस प्रलोभन का सामना करना पड़ेगा। इसलिए यीशु जानता था कि वह उसे अस्वीकार करने जा रहा था।

उसके पास वह मध्य ज्ञान था। लेकिन परमेश्वर ने पतरस को मसीह को अस्वीकार करने के वास्तविक चुनाव का आदेश नहीं दिया। इसलिए, यह परमेश्वर और बुराई के बीच एक अवरोध पैदा करता है।

भगवान एक ऐसी दुनिया का आदेश दे सकते हैं जिसमें उनके पास उस दुनिया में वास्तविक बुराईयों का आदेश दिए बिना यह सब मध्य ज्ञान हो। क्या यह वास्तव में काम करता है, यह सवाल भगवान को मानव स्वतंत्रता को बाधित करने या उल्लंघन करने या बुराई की घटना के लिए जिम्मेदार होने से रोकने का है। क्रेग ऑगस्टीनियन कैल्विनिस्ट दृष्टिकोण के बारे में प्रोविडेंस पर वैकल्पिक विचारों की आलोचना करते हैं।

वह कहता है कि वह ईश्वर को बुराई का रचयिता बनाता है, क्योंकि ईश्वर ने सभी चीजों का पूर्व-निर्धारण उसके पूर्वज्ञान से पहले ही कर दिया है। यह सरल ईश्वरीय पूर्वज्ञान समस्याजनक है क्योंकि यह ईश्वरीय पूर्वनिर्धारण को महत्वहीन बना देता है क्योंकि भविष्य को बदला नहीं जा सकता। यदि ईश्वर को यह पता है, तो उसके आदेशों का कोई मतलब नहीं है।

यह एक ऐसा बिंदु है जिसे खुले ईश्वरवादी ने सरल ईश्वरीय पूर्वज्ञान के विरुद्ध बनाया है। और फिर, खुले ईश्वरवादी दृष्टिकोण के संबंध में, क्रेग कहते हैं कि यह पूरी तरह से बाइबल के विरुद्ध है। अन्य रूढ़िवादी विचारों के समर्थक इस बिंदु पर क्रेग से दिल से सहमत होंगे।

तो, क्या ईश्वरीय मध्य ज्ञान एक संतोषजनक दृष्टिकोण है? ईश्वरीय मध्य ज्ञान की आलोचना में कुछ आपत्तियाँ लगातार की गई हैं, लेकिन उनमें से सबसे महत्वपूर्ण है आधार आपत्ति। और वह समस्या यह है: स्वतंत्रता के एक उदारवादी दृष्टिकोण को देखते हुए, ईश्वर यह नहीं जान सकता कि स्वतंत्र प्राणी क्या चुनेंगे या वे विभिन्न स्थितियों में क्या चुनेंगे क्योंकि ऐसा कुछ भी मौजूद नहीं है जो उन्हें सत्य बनाता हो या उनकी सच्चाई को आधार देता हो। किस आधार पर ईश्वर जान सकता है कि पतरस उस स्थिति में होने पर मसीह को अस्वीकार कर देगा? यही आधार आपत्ति है।

अब, क्रेग ने यह दावा करते हुए जवाब दिया कि ग्राउंडिंग आपत्ति वह मानती है जिसे वह सत्य निर्माता सिद्धांत कहते हैं, जो कहता है कि किसी भी सत्य के लिए, ऐसा कुछ होना चाहिए जो उसे सत्य होने का कारण बनता है। हालाँकि, क्रेग के अनुसार, किसी प्रस्ताव और उसके सत्य के बीच का संबंध एक कारण संबंध नहीं है। क्या यह वास्तव में इस समस्या को दूर करता है, यह सवाल है।

क्या यह आधार आपत्ति के लिए पर्याप्त प्रतिक्रिया है? मुझे नहीं लगता कि आधार आपत्तिकर्ता को सत्य-निर्माता सिद्धांत को मानना होगा। सत्य के पत्राचार सिद्धांत का कोई भी संस्करण आधार आपत्ति को कारगर बनाने के लिए काम करेगा। मुझे लगता है कि सवाल इस तरह से पूछा जा सकता है: दिव्य मध्य ज्ञान में प्रतितथ्यात्मक सत्य वास्तव में किससे मेल खाते हैं? यह वास्तव में एक उत्तर की मांग करता है।

इससे जुड़ी एक और समस्या है। शायद यह इस ग्राउंडिंग समस्या का एक पहलू है। मुझे लगता है कि मोलिनवाद बहुत ही सूक्ष्म तरीके से एक तरह के नियतिवाद को मानता है, एक तरह का नियतिवाद जिसे मोलिनवादी स्वीकार नहीं करना चाहता।

इस पूरे विचार के कारण कि मामला क्या होगा, जब आप इसका विश्लेषण करते हैं, तो मुझे लगता है कि आपको मूल रूप से अगर और अवश्य का योग मिलता है। यह कहना कि पतरस ऐसी-ऐसी परिस्थितियों में मसीह को अस्वीकार करेगा, इसका मतलब है कि अगर उसे किसी निश्चित स्थिति में रखा जाता है, तो वह ऐसा-ऐसा करेगा। अगर उसे ऐसी परिस्थिति में रखा जाता है जहाँ उसे मसीह को अस्वीकार करने का प्रलोभन दिया जाता है, तो वह ऐसा करेगा।

उसे यह काम अनिवार्य रूप से करना चाहिए। यदि यह बात ईश्वर को पता है, तो यह वही समस्या है जिसका सामना साधारण ईश्वरीय पूर्वज्ञान से होता है। ईश्वर जो जानता है, चाहे वह साधारण ईश्वरीय पूर्वज्ञान के संदर्भ में हो या ईश्वरीय मध्य ज्ञान के संदर्भ में, यदि वह जानता है कि ऐसा होगा या ऐसा होगा, तो परिस्थितियों को देखते हुए, इसका पालन होना चाहिए क्योंकि ईश्वर इसे जानता है।

तो, इसमें एक तरह का नियतिवादी पहलू है जिसे क्रेग, बेशक, नकारेंगे और अन्य मोलिनिस्ट भी नकारेंगे, लेकिन मुझे लगता है कि यह वास्तव में मौजूद है, और यह दिव्य मध्य ज्ञान के लिए एक समस्या है। अंत में, ऑगस्टीनियन कैल्विनिस्ट दृष्टिकोण है, जो कहता है कि भगवान ने दुनिया बनाने और इंसानों को बनाने में कोई जोखिम नहीं उठाया और भगवान ने मानव इतिहास में प्रकृति की सभी घटनाओं को पूर्वनिर्धारित किया। जैसा कि वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ फेथ में कहा गया है, इस दृष्टिकोण के कुछ समर्थकों में पॉल हेल्म, स्टीव कोवेन और मैं शामिल हूं।

मैंने अपनी लिखी किताब द बेनिफिट्स ऑफ प्रोविडेंस में इस दृष्टिकोण का बचाव किया है। लेकिन इस दृष्टिकोण में भी कुछ समस्याएं हैं। इन चारों दृष्टिकोणों में समस्याएं हैं, और ऑगस्टीनियन कैल्विनिस्ट दृष्टिकोण में एक समस्या यह है कि इसमें यह निहित है कि मनुष्य के पास स्वतंत्रता नहीं है और इसलिए, वे नैतिक रूप से जिम्मेदार नहीं हैं।

यह इस दृष्टिकोण के साथ एक बड़ी समस्या होगी, और मुझे लगता है कि अगर ऐसा हुआ तो यह विनाशकारी होगा। लेकिन जबकि यह सच है कि ऑगस्टीनियन कैल्विनिस्ट दृष्टिकोण स्वतंत्रता के उदारवादी दृष्टिकोण के अनुरूप नहीं है, यह अभी भी स्वतंत्रता के उस दृष्टिकोण के अनुरूप है जो प्रशंसनीय और उचित है, और यह संगतवादी दृष्टिकोण है जिसके बारे में हमने बात की। यह किसी की पसंद के अनुसार कार्य करने या न करने की स्वतंत्रता है।

भले ही किसी व्यक्ति की पसंद उसकी मनोवैज्ञानिक स्थिति और सबसे मजबूत इरादों और इच्छाओं से निर्धारित होती हो, फिर भी एक व्यक्ति तब तक स्वतंत्र है जब तक वह अपनी पसंद के अनुसार कार्य करने में सक्षम है। इसलिए, यह स्वतंत्रता के स्थान को स्वतंत्रतावादी दृष्टिकोण से अलग स्थान पर रखता है। स्वतंत्रतावादी दृष्टिकोण कहता है कि स्वतंत्रता का संबंध इच्छा से है जो पूरी तरह से कारणात्मक रूप से निर्धारित नहीं होती है।

संगतिवादी कहते हैं कि नहीं; स्वतंत्रता का संबंध किसी व्यक्ति द्वारा किए गए विकल्पों पर कार्य करने की एक निश्चित क्षमता से है, भले ही किसी व्यक्ति के विकल्प निर्धारित हों। संगतिवाद की कुछ खूबियों में यह शामिल है कि यह संपूर्ण दिव्य पूर्वज्ञान, जिसके बारे में हमने बात की, और स्वतंत्रतावादी स्वतंत्रता के बारे में असंगति की समस्या से बचता है। संगतिवाद सामान्य भाषा और हम अपने विकल्पों के कारणों की पहचान कैसे करते हैं, के साथ भी मेल खाता है।

अगर कोई पूछे, अच्छा, आपने इसे क्यों चुना? ऐसा बहुत कम होता है, कोई कहे, मुझे नहीं पता। लगभग हमेशा, एक व्यक्ति अपने स्वयं के विकल्पों के कारणों की पहचान करने में सक्षम होता है, और ऐसा करने में, वह अपनी स्वतंत्रता से इनकार नहीं कर रहा होता है। वास्तव में, वे कहेंगे, यही कारण है कि यह एक स्वतंत्र विकल्प था क्योंकि मैंने इसे इस और इस और इस वजह से चुना।

इससे पता चलता है कि यह एक तर्कसंगत विकल्प था, और तर्कसंगत विकल्प स्वतंत्र विकल्प होते हैं। संगतिवाद भी स्वतंत्रता और स्वर्ग में आज्ञाकारिता के आश्वासन के लिए सबसे अच्छा हिसाब रखता है। हम स्वर्ग में स्वतंत्र होने और यह कि हम हमेशा-हमेशा के लिए परमेश्वर की

आज्ञा का पालन करेंगे, इसका अर्थ कैसे समझ सकते हैं, यदि परमेश्वर यह निर्धारित नहीं कर रहा है या गारंटी नहीं दे रहा है कि हम कभी पाप नहीं करेंगे।

स्वतंत्रतावादी दृष्टिकोण से, यह समस्याग्रस्त प्रतीत होता है। वाह, आप स्वर्ग में अपनी स्वतंत्रता खो देते हैं? संगतिवादियों के लिए, नहीं, आप स्वर्ग में अपनी स्वतंत्रता बनाए रखते हैं जैसे आप यहाँ स्वतंत्र थे। सिर्फ इसलिए कि ईश्वर आपको घेरे हुए है और चीज़ों को इस तरह से निर्धारित करता है कि आप स्वर्ग में कभी पाप न करें, इससे आपकी स्वतंत्रता नहीं छिनती क्योंकि आपके पास अभी भी अपनी पसंद के अनुसार कार्य करने की संगतिवादी स्वतंत्रता है।

वह बस यह गारंटी देता है कि आपके सभी विकल्प अच्छे होंगे। तो ये हैं संगतिवाद की कुछ ताकतें और लाभ। ऑगस्टीनियन कैल्विनिस्ट दृष्टिकोण के साथ एक और समस्या यह है कि यह बुराई की अधिक गंभीर समस्या से ग्रस्त है।

ऐसा लगता है कि यह ईश्वर को पाप का रचयिता बनाता है। ऑगस्टीनियन कैल्विनिस्ट इसका जवाब यह कहकर देंगे कि, नहीं, यह ऑगस्टीनियन कैल्विनिस्ट दृष्टिकोण पर कोई बदतर समस्या नहीं है, जैसा कि प्रोविडेंस के अन्य विचारों पर है, जो संपूर्ण दिव्य पूर्वज्ञान की पुष्टि करते हैं। ऑगस्टीनियन कैल्विनिस्ट आमतौर पर बुराई की समस्या के लिए जो दृष्टिकोण अपनाते हैं, वह अधिक अच्छाई है, यह कल्पना कि ईश्वर ने इस दुनिया में बुराई की अनुमति दी है, यहाँ तक कि अधिक अच्छाई लाने के लिए यीशु के क्रूस पर चढ़ने जैसी भयानक घटनाओं को भी निर्धारित किया है।

तो जाहिर है, मानव इतिहास में अब तक हुई सबसे बुरी बुराई के संबंध में सबसे बड़ी भलाई, मसीह के पूर्ण प्रायश्चित्त कार्य के माध्यम से मानव जाति का उद्धार था। यदि परमेश्वर उस बुराई को महान भलाई के लिए भुना सकता है, तो वह सभी छोटी बुराइयों को भी भुना सकता है। तो यह आम तौर पर ऑगस्टीनियन कैल्विनिस्ट प्रतिक्रिया है।

इस धार्मिक प्रतिमान, प्रोविडेंस के इस ऑगस्टीनियन कैल्विनिस्ट दृष्टिकोण के अपने स्वयं के विकास के बारे में अधिक जानने के लिए, मेरी पुस्तक, *प्रोविडेंस के लाभ, ईश्वरीय संप्रभुता पर एक नया नज़रिया देखें*, जहाँ मैं विज्ञान के अभ्यास पर ईश्वरीय संप्रभुता के इस दृष्टिकोण के निहितार्थों, दुनिया के प्रति हमारे सौंदर्यवादी दृष्टिकोण, ईश्वरीय भावना, बुराई की समस्या, साथ ही ईसाई नैतिकता और आध्यात्मिक गठन के मुद्दों का पता लगाता हूँ। मैं पुस्तक की शुरुआत ईश्वरवाद की आलोचना करने वाले कुछ अध्यायों से करता हूँ, इससे पहले कि मैं ईश्वरीय संप्रभुता के उच्च दृष्टिकोण के उन सकारात्मक लाभों पर चर्चा करूँ। तो, ईश्वरीय प्रोविडेंस के बारे में हमारी चर्चा यहीं समाप्त होती है।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 15 है, ईश्वरीय विधान।